सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।

श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।

निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।
सर्वदा ध्यात्म तल्लीनं, श्रीमन्तं प्रियदर्शनम्।
इन्द्रदमनमाचार्यं, पीठाध्यक्षं नमाम्यहम्।।
आर्त्तत्राण प्रतिज्ञाय शुद्धाद्वैतावलम्बिने।
श्रीनाथ पीठाधिष्ठात्रे राकेशाय वयं नुमः।।

प्रति १,००,००० {न्योछावर ८/- रुपया}

निवेदन

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के अन्त में श्रीमहाप्रभु जी के उपदेश पृष्ठ २७ से लेकर ३२ पर प्रकाशित किये हैं। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मंगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष

विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.nathdwaratemple.org के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	८	अप्रेल, सन् २०१६ संवत्सरोत्सवः। इष्टिः।
२	शनि	६	गणगौरी। तीज का क्षय होयवे सूं आज।
४	रवि	१०	
५	सोम	११	
६	मंगल	१२	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (१६१५)
७	बुध	१३	मेष संक्रान्ति। सतुआ, भोग या शयन भोग में, ता पीछे दान, श्राद्धादि करने पुण्यकाल मध्याह्न सूं लेके सूर्यास्त पर्यन्त तामे भी सूर्यास्त के पास के २ घण्टा अति मुख्य पुण्यकाल । अब के यह संक्रान्ति आज रात्रि के ७ बजके ४६ मिनिट पर बैठे है। ता सूं पुण्यकाल आज मध्याह्न सूं मान्यो जायगो।
८	गुरु	१४	
६	शुक्र	१५	रामनवमी व्रतम्।
१०	शनि	१६	रामनवमी व्रत की पारणा।
११	रवि	१७	कामदा एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई।
१२	सोम	१८	
१३	मंगल	१६	
१४	बुध	२०	
१४	गुरु	२१	
१५	शुक्र	२२	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३८-५३९			**वैशाख (गु.चैत्र) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	२३	
२	रवि	२४	
३	सोम	२५	
४	मंगल	२६	
५	बुध	२७	
६	गुरू	२८	
७	शुक्र	२९	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सवः।
८	शनि	३०	
९	रवि	१	मई।
१०	सोम	२	पांच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
११	मंगल	३	वरूथिनी एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्यजी (श्री महाप्रभुजी) को उत्सव। (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५३९ को प्रारम्भ।
१२	बुध	४	
१३	गुरू	५	
३०	शुक्र	६	

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	७	इष्टिः।
२	रवि	८	
३	सोम	९	अक्षय तृतीया चन्दन यात्रा त्रेतायुगादि जलकुम्भदानम्।
४	मंगल	१०	
५	बुध	११	
६	गुरू	१२	
७	शुक्र	१३	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१९९०)
८	शनि	१४	
९	रवि	१५	
१०	सोम	१६	
११	मंगल	१७	मोहिनी एकादशी व्रतम् ।
१२	बुध	१८	
१३	गुरू	१९	
१४	शुक्र	२०	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम्।
१५	शनि	२१	

वल्लभाब्द ५३९		ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः	विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	२२	इष्टिः।
२	सोम	२३	चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत।
२	मंगल	२४	
३	बुध	२५	आज सूं ले के ज्येष्ठ शुक्ल ३ मंगल पर्यन्त सूर्य कूं रोहिणी नक्षत्र है, ता सूं इन दिनन में श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
४	गुरु	२६	
५	शुक्र	२७	
६	शनि	२८	
७	रवि	२९	
९	सोम	३०	
१०	मंगल	३१	
११	बुध	१	जून, अपरा एकादशी व्रतम्।
१२	गुरू	२	
१३	शुक्र	३	
१४	शनि	४	
३०	रवि	५	इष्टिः।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
२	सोम	६	
३	मंगल	७	
४	बुध	८	
५	गुरू	९	श्री के नाव को मनोरथ।
६	शुक्र	१०	
७	शनि	११	
८	रवि	१२	
९	सोम	१३	
१०	मंगल	१४	श्री गंगादशमी दशहरा श्री यमुनाजी को उत्सव माने हे।
१०	बुध	१५	
११	गुरू	१६	निर्जला एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	१७	
१३	शनि	१८	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव। (१६००)
१४	रवि	१९	स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।
१५	सोम	२०	ज्येष्ठाभिषेक (स्नान यात्रा) प्रातः ६ बजके ६ मिनिट पूर्व अभिषेक होय ऐसो सेवा क्रम राखनो।

वल्लभाब्द ५३६	आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	२१	इष्टिः।
२	बुध	२२	
३	गुरू	२३	
४	शुक्र	२४	
५	शनि	२५	
६	रवि	२६	
७	सोम	२७	
८	मंगल	२८	
९	बुध	२९	
१०	गुरू	३०	
१२	शुक्र	१	जुलाई। योगिनी एकादशी व्रतम्।
१३	शनि	२	
१४	रवि	३	
३०	सोम	४	सोमवती अमावस। तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५)

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	५	इष्टिः।
२	बुध	६	रथयात्रा।
३	गुरू	७	
४	शुक्र	८	
५	शनि	९	श्री द्वारकाधीश जी को पाटोत्सवः।
६	रवि	१०	कसूंभा छठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी बिराजे सो उत्सव तथा तिलकायित श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज गादी बिराजे (२०५७)
७	सोम	११	
८	मंगल	१२	
९	बुध	१३	
१०	गुरू	१४	
११	शुक्र	१५	देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्य नियमारम्भः।
१२	शनि	१६	
१३	रवि	१७	
१४	सोम	१८	
१५	मंगल	१९	पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्य नियमारम्भः। एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	बुध	२०	इष्टिः। हिन्दोलारम्भः।
२	गुरु	२१	
३	शुक्र	२२	
४	शनि	२३	श्री चन्द्रमा जी को पाटोत्सवः।
५	रवि	२४	
६	सोम	२५	
७	मंगल	२६	
८	बुध	२७	जन्माष्टमी की बधाई।
६	गुरू	२८	
१०	शुक्र	२६	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेश जी महाराज को उत्सव। हाण्डी उत्सव (१७६३)।
११	शनि	३०	कामिका एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	३१	
१४	सोम	१	अगस्त।
३०	मंगल	२	हरियाली अमावस।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	बुध	३	इष्टिः।
२	गुरु	४	
३	शुक्र	५	ठकुरानी तीज मधुस्रवा।
४	शनि	६	
५	रवि	७	नाग पंचमी।
६	सोम	८	
६	मंगल	९	
७	बुध	१०	
८	गुरू	११	
९	शुक्र	१२	सात स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१०	शनि	१३	
११	रवि	१४	पुत्रदा एकादशी व्रतम्। पवित्रारोपणं सायं उत्थापन में सायं ५ बजके ३३ मिनिट पश्चात् याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत।
१२	सोम	१५	गुरुन कूं पवित्रा धरावने।
१३	मंगल	१६	
१४	बुध	१७	श्री विट्ठलेशराय जी महाराज को उत्सव (१६५७)। ऋग्वेदीन की श्रावणी।
१५	गुरू	१८	रक्षाबन्धनं प्रातः शृंगार में गुसांई जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधर जी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (१६३२) आपस्तम्भ हिरण्य केशीय बोधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति, सर्व यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीन की श्रावणी।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	१९	इष्टिः। गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलाल जी महाराज को उत्सव (१९१७) हेम हिन्दोला।
२	शनि	२०	
३	रवि	२१	कज्जली तीज। हिन्दोला विजय।
५	सोम	२२	
६	मंगल	२३	
७	बुध	२४	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णु स्वामी प्राकट्योत्सव।
८	गुरू	२५	जन्माष्टमी व्रतम्।
९	शुक्र	२६	नन्द महोत्सव।
१०	शनि	२७	
११	रवि	२८	अजा एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	२९	
१३	मंगल	३०	
१४	बुध	३१	काका वल्लभ जी को उत्सव (१७०३)।
३०	गुरू	१	सितम्बर, कुशग्रहणी अमावस।

वल्लभाब्द ५३९ **भाद्रपद शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७३

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	२	इष्टिः। राधाष्टमी की बधाई।
२	शनि	३	
३	रवि	४	सामवेदीन की श्रावणी।
४	सोम	५	गणेश चतुर्थी।
५	मंगल	६	ऋषि पंचमी। द्वितीय स्वरूपोत्सवः।
६	बुध	७	तिलकायित श्री विट्ठलेश जी महाराज को उत्सव (१७४४)।
७	गुरू	८	
८	शुक्र	९	राधाष्टमी।
९	शनि	१०	
९	रवि	११	
१०	सोम	१२	
११	मंगल	१३	नवलक्ष ग्रंथकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव (१७१४) परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी) वामन द्वादशी (विष्णुशृंखल योग)
१२	बुध	१४	
१४	गुरू	१५	
१५	शुक्र	१६	सांझी को आरम्भः।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	१७	इष्टिः। श्राद्ध पक्ष को आरम्भः ताको निर्णय पृष्ठ २६ पर एवं श्राद्ध को संकल्प पृष्ठ २७ पर लिख्यो है।
२	रवि	१८	
३	सोम	१६	
४	मंगल	२०	
५	बुध	२१	श्री हरिराय को उत्सव (१६४७)।
६	गुरू	२२	
८	शुक्र	२३	श्री महाप्रभु जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथ जी के पुत्र श्री पुरुषोत्तम जी को उत्सव (१५८७)।
६	शनि	२४	
१०	रवि	२५	
११	सोम	२६	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)।
१२	मंगल	२७	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव (१५६७)।
१३	बुध	२८	श्री गुसांई जी के तीसरे लालजी श्री बालकृष्णजी को उत्सव (१६०६)।
१४	गुरू	२६	
३०	शुक्र	३०	सर्वपितृ अमावस कोट की आरती और सांझी की समाप्ति।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	१	अक्टूबर, इष्टिः। नवरात्रारम्भः। मातामह श्राद्ध।
१	रवि	२	
२	सोम	३	
३	मंगल	४	
४	बुध	५	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) १८५४
५	गुरू	६	
६	शुक्र	७	
७	शनि	८	सरस्वती पूजनारम्भः।
८	रवि	९	
९	सोम	१०	
१०	मंगल	११	दशहरा (विजयादशमी) सरस्वती विसर्जनम्। श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधर जी को उत्सव।
११	बुध	१२	पाशां कुशा एकादशी व्रतम्।
१२	गुरू	१३	
१३	शुक्र	१४	श्री बालकृष्ण जी को पाटोत्सवः।
१४	शनि	१५	शरद पूर्णिमा (रासोत्सव)।
१५	रवि	१६	कार्त्तिक स्नानारम्भः। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३९	**कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
२	सोम	१७	
३	मंगल	१८	
४	बुध	१९	
५	गुरू	२०	
६	शुक्र	२१	
७	शनि	२२	
८	रवि	२३	
९	सोम	२४	
१०	मंगल	२५	
११	बुध	२६	रमा एकादशी व्रतम्।
१२	गुरू	२७	
१३	शुक्र	२८	धनतेरस।
१४	शनि	२९	रूप चतुर्दशी (अभ्यंग)।
३०	रवि	३०	दीपोत्सव (दीपावली) हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्) कान जगाई।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	सोम	३१	इष्टिः। अन्नकूटोत्सवः। गोवर्द्धन पूजा। गुर्जराणां २०७३ वर्षारम्भः।
२	मंगल	१	नवम्बर, यम द्वितीया।
३	बुध	२	
४	गुरू	३	
४	शुक्र	४	
५	शनि	५	
६	रवि	६	
७	सोम	७	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज कृत (२०६३)।
८	मंगल	८	गोपाष्टमी।
९	बुध	९	अक्षय नवमी। कृत युगादि कूष्माण्ड दानम्।
१०	गुरू	१०	
११	शुक्र	११	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं सायं संध्या में श्री गुसांई जी के प्रथम लालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलाल जी श्री रघुनाथजी को उत्सव (१६११)। द्वादशी को क्षय होयवे सूं आज।
१३	शनि	१२	
१४	रवि	१३	ति. श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६)।
१५	सोम	१४	चार स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत चातुर्मास्य तथा कार्त्तिक के नियम की समाप्ति। गोपमासारम्भः।

वल्लभाब्द ५३९ **मार्गशीर्ष (गु. कार्त्तिक) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७३

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	१५	इष्टिः। (व्रतचर्या) अथवा गोपमासारम्भः।
२	बुध	१६	
३	गुरू	१७	छः स्वरूप को उत्सव। तिलकायित श्री दाऊजी महाराज कृत। चतुर्थी को क्षय होयवे सूं आज।
५	शुक्र	१८	
६	शनि	१९	
७	रवि	२०	गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज को उत्सव (१९८४)
८	सोम	२१	श्री गुसांई जी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दराय जी को उत्सव (१५९९)।
९	मंगल	२२	
१०	बुध	२३	
११	गुरू	२४	
११	शुक्र	२५	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	२६	श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निज मंदिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज कृत (२०६३)
१३	रवि	२७	श्री गुसांई जी के सातवे लालजी श्री घनश्याम जी को उत्सव (१६२८)।
१४	सोम	२८	
३०	मंगल	२९	

वल्लभाब्द ५३९			**मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	३०	इष्टिः।
२	गुरू	१	दिसम्बर।
३	शुक्र	२	
४	शनि	३	
५	रवि	४	श्री मदनमोहन जी को पाटोत्सवः।
६	सोम	५	
७	मंगल	६	श्री गुसांई जी के चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८)।
८	बुध	७	सात स्वरूप को उत्सव। श्री गोवर्द्धनेश जी महाराज कृत।
९	गुरू	८	श्री गुसांई जी के उत्सव की बधाई।
१०	शुक्र	९	
११	शनि	१०	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	११	
१३	सोम	१२	
१४	मंगल	१३	छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास की समाप्ति। पूर्णिमा का क्षय होयवे सूं आज।

वल्लभाब्द ५३९			**पौष (गु. मार्गशीर्ष) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	१४	इष्टिः। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव (२००५)।
२	गुरू	१५	धनुर्मासारम्भः।
३	शुक्र	१६	
४	शनि	१७	
५	रवि	१८	
६	सोम	१९	
७	मंगल	२०	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव। (१६२५)
८	बुध	२१	
९	गुरू	२२	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्ठलनाथ जी को उत्सव (१५७२)।
१०	शुक्र	२३	
११	शनि	२४	तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१७६९)। सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो।
१२	रवि	२५	
१३	सोम	२६	
१३	मंगल	२७	
१४	बुध	२८	
३०	गुरू	२९	गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज के पुत्र **चि.गो. श्री भूपेश कुमार जी (श्री विशाल बाबा)** को जन्मदिन (२०३७)।

वल्लभाब्द ५३६			**पौष शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	३०	इष्टिः।
२	शनि	३१	
३	रवि	१	जनवरी सन् २०१७ को प्रारम्भः।
४	सोम	२	
५	मंगल	३	
६	बुध	४	नित्य लीलास्थ गो. श्री १०८ श्री दामोदरलाल जी महाराज को उत्सव (१९५३)।
७	गुरू	५	
८	शुक्र	६	
९	शनि	७	
१०	रवि	८	
१२	सोम	९	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
१३	मंगल	१०	
१४	बुध	११	
१५	गुरू	१२	माघ स्नानारम्भः।

वल्लभाब्द ५३९	माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	१३	इष्टिः। भोगी, धनुर्मास की समाप्तिः।
२	शनि	१४	मकर संक्रान्तिः। तिलवा गोपी वल्लभ अथवा राजभोग में ता पीछे दान श्राद्धादि करने अबके यह संक्रान्ति २ शनि कूं प्रातः ७ बजके ४० मिनिट पर बैठे है। तांसू पुण्यकाल आज प्रातः ७ बजके ४० मिनिट से लेके दिन के ३ बजके ४० मिनिट पर्यन्त तामे भी प्रातः ७ बजके ४० मिनिट सूं ९ बजके ४० मिनिट तक २ घंटा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण।
३	रवि	१५	
४	सोम	१६	
५	मंगल	१७	
६	बुध	१८	
७	गुरू	१९	
८	शुक्र	२०	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (१७११)।
९	शनि	२१	
१०	रवि	२२	
११	सोम	२३	षट् तिला एकादशी व्रतम्। तिल की वस्तु अवश्य भोग धरनो। तिल के दान भक्षणादि करने।
१२	मंगल	२४	
१३	बुध	२५	
१४	गुरू	२६	
३०	शुक्र	२७	

वल्लभाब्द ५३६			**माघ शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	२८	इष्टिः।
२	रवि	२९	
३	सोम	३०	
४	मंगल	३१	श्री मुकुन्दराय जी को पाटोत्सव।
५	बुध	१	फरवरी, बसन्त पंचमी
६	गुरू	२	
७	शुक्र	३	
८	शनि	४	
९	रवि	५	
१०	सोम	६	
११	मंगल	७	जया एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	८	
१३	गुरू	९	
१४	शुक्र	१०	माघ स्नान की समाप्ति। होरी डांडो दण्डारोपण, आज सूर्यास्त के पीछे सायं ६ बजके ४५ मिनिट के अनन्तर याही समय धमार को आरम्भ, रोपणी को उत्सव।

वल्लभाब्द ५३९			**फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	११	इष्टिः।
२	रवि	१२	
३	सोम	१३	
४	मंगल	१४	
५	बुध	१५	
५	गुरू	१६	
६	शुक्र	१७	
७	शनि	१८	श्रीनाथजी को पाटोत्सवः।
८	रवि	१९	
९	सोम	२०	
१०	मंगल	२१	
११	बुध	२२	विजया एकादशी व्रतम्।
१२	गुरू	२३	
१३	शुक्र	२४	
१४	शनि	२५	
३०	रवि	२६	

वल्लभाब्द ५३९			**फाल्गुन शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	२७	इष्टिः।
२	मंगल	२८	
३	बुध	१	मार्च।
४	गुरू	२	
५	शुक्र	३	
६	शनि	४	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। **श्री गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज** को जन्मदिन २००६ सप्तमी को क्षय होयवे सूं आज।
८	रवि	५	होलिकाष्टकारम्भः।
९	सोम	६	
१०	मंगल	७	
११	बुध	८	आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
१२	गुरू	९	
१३	शुक्र	१०	
१४	शनि	११	
१५	रवि	१२	होली होलिका प्रदीपनं सूर्यास्तानन्तरं सायं ६ बजके ४१ मिनिट के अनन्तर।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	सोम	१३	इष्टिः। धूलिवन्दन (धुरेण्डी) दोलोत्सव (डोल)।
२	मंगल	१४	द्वितीया पाट।
३	बुध	१५	
४	गुरू	१६	
५	शुक्र	१७	
६	शनि	१८	
७	रवि	१९	
७	सोम	२०	
८	मंगल	२१	
९	बुध	२२	
१०	गुरू	२३	
११	शुक्र	२४	पापमोचिनी एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	२५	
१३	रवि	२६	
१४	सोम	२७	सोमवती अमावस। १० बजके ४५ मिनिट के अनन्तर
३०	मंगल	२८	इष्टिः। संवत्सरोत्सवः प्रातः ८ बजके २८ मिनिट के अनन्तर वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्।।

श्राद्धपक्ष को निर्णय

आश्विन (गु.भाद्रपद) कृष्ण पक्ष

आश्विन कृष्ण प्रतिपदा १ शनि से लेकर ३ सोम तक सब श्राद्ध तिथि प्रमाणे करने। ४ मंगल कूं ४ एवं ५ को श्राद्ध, ५ बुध कूं ६ का श्राद्ध ६ गुरु कूं ७ का श्राद्ध, ८ शुक्र सूं ले के आश्विन शुक्ल १ शनि तक, सब श्राद्ध तिथि प्रमाणे करने। जाकी मरण तिथि पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो।

भाद्रपद की पूर्णिमा श्राद्ध पक्ष में नहीं है। ४ मंगल के दिन भरणी नक्षत्र है तासूं पिण्ड रहित श्राद्ध करिवे सूं गया श्राद्ध जैसो फल लिख्यो है। ८ शुक्र के दिन श्राद्ध समय व्यतीपात भी है तासूं ये दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है तासूं कोई भी तिथि को श्राद्ध रही गयो होय या रहि जायवे को सम्भव होय तो इन दिनन में श्राद्ध करनो। ९ शनि के दिन मातृ नवमी के श्राद्ध माता प्रभृति सुवासिनी मृत भई होय तो एवाती सुवासिनी भी अवश्य जिमावनी। १२ मंगल के दिन सन्यासीन को महालय श्राद्ध १३ बुध कूं श्राद्ध समय मघा नक्षत्र भी है तासूं मघा निमित्त श्राद्ध अवश्य करनो चाहिए। जो न बन सके तो सर्व पितृगण के नामोच्चारण पूर्वक एक संकल्प करके ब्राह्मण भोजन अवश्य ही करवानो। क्योंकि जो श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कछु भी न करें ता कूं दोष लिख्यो है।

१४ गुरु कूं चतुर्दशी निमित्तक घायलन के श्राद्ध, जलशास्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही यादिन श्राद्ध, जाकी मरण तिथि चतुर्दशी होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन में करनो।

३० शुक्र सूं सर्वपितृ अमावस्या तथा आश्विन शुक्ल १ शनि कूं मातामह श्राद्ध।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

¬fo".kq% 3 Jhen~ Hkxorks egkiq#"kL; fo".kksjkK;k çoZÙkeku L;k/kczkã.kks f}rh;ijk/ksZ Jh 'osrokjkgdYis oSoLoreUoUrjsa "Vkfoa'kfr redfy;qxs dfyizFkepj.ks HkwyksZds tacw}his Hkkjro'ksZ vk;kZorkZUrxZr czãorSZdns'ks veqdns'ks dkS)korkjs lkSE; ukfEu=;% lIrfr% vf/kd f}lgL=la[;kds oS'ØekCns 'kdkuqlkjs.knqeoZ[kuke laoRljs 'kjn`rkS vkf'ou ekls ¼xqtZj Hkkaaineekls½ d`".ki{ks veqdfrFkkS okljkfUorkk;kau{k= ;ksxs] dj.ks veqdjkf'kfLFkrs pUnzs] dU;kjkf'kfLFkrs lw;sZ dU;kjkf'kfLFkrs Jh nsoxqjkS 'ks'ks'kqxgs'kq ;FkkjkfT'kLFkkufLFkrs'kq lRlqaxqxq.kfo'ks'k.k fof'k"Vk;ka 'kqHkiq.;frFkkS ee ¼uke lEcU/kksPpkj.k½ ,rs'kka ;Fkkuke~ xksS= :ik.kka iq#'kfo'k;s liRuhdkuka L=hfo'k;s lHkr`ZdlkiR;kfof/kukegky;kij i{kJk)eFkok ld`Uegky;kij i{kJk) lnSo l|% dfj";s%A

AAbfr Jk)i{k fu.kZ; lekIr AA

Jhegkç Hkqth dsmins'k

1- Hkxoku~ tcizLUugks tkrs gSa rks thods lHkh nq%[kksa dks feVk nsrs gSaA

2- HkDrgh Hkxoku~ dk /kugS vkSj HkDr ds /ku Hkxoku~ gh gSa] tSls /kudyksa ds euesa rFkk dgj /kudh gh Hkkouk ,oa ppkZ jgrh gS oSls gh HkDr ds Hkhrj ,oa dgj Hkxoku~ dk gh lEcU/k jgrk gS vkSj Hkxoku~ ds Hkh Hkhrj ,oa dgj HkDr dk gh lEcU/k cuk jgrk gSA

3- Hkxon~ HkDr vU/kdkj dh vksj ugha tkrsA

4- nks"k fuo`fÙk dk ,dek= mik; gS] Hkxon~ xq.kxkuA

xf.krdÙkkZ % **f=ikBh jkts'oj ;nquUnu th 'kkL=h**

eks- % 9414473016

।। श्रीहरिः ।।

ब्रह्मसम्बन्ध की आवश्यकता

जगत् के सभी मानव यह चाहते हैं कि हमें किसी प्रकार का कोई दुःख न हो और परमानन्द की प्राप्ति हो। किन्तु इसका कोई विचार नहीं करता है कि दुःखों का कारण क्या है जब तक दुःखों की प्राप्ति का कारण विद्यमान रहेगा तब तक दुःखों की उत्पत्ति अवश्यंभावी है। दुःखों का कारण है, सांसारिक पदार्थों में आसक्ति (ममता) का होना। हम सांसारिक पदार्थों को अपने सुख का साधन मानते हैं। परन्तु क्या ये पदार्थ हमारे हैं ? यदि हमारे हैं तो इनको छीनने का अधिकार अन्य किसी को नहीं होना चाहिये, किन्तु वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। ये जगत् के पदार्थ हमारे नहीं हैं। हमने इन्हें अज्ञानता से अपना मान लिया है। जब इन पदार्थों का स्वामी हमसे इन पदार्थों को छीन लेता है उस समय हमको शोक या दुःख होता है। शोक या दुःख का होना अज्ञानता है। जिसकी जो वस्तु है उसका स्वामी उसकी जब इच्छा होगी वह ले लेगा। तब ये जगत् के पदार्थ हैं किसके ? इसका उत्तर श्रीमद्भागवत में बलि की पत्नी विन्ध्याबली ने दिया है। उसने वामन भगवान् से प्रार्थना की है कि भगवन्! यह मेरा पति बलि इन तीनों लोकों का स्वामी अपने को माने हुए था, इसकी यह भूल थी। वास्तव में तो ये तीनों लोक और इनके सकल पदार्थ आपके हैं। आपने अपनी क्रीड़ा के लिये इनका निर्माण किया है किन्तु यह मेरा पति अज्ञानता से इन्हें अपना मान रहा था ''क्रीडार्थमात्मन इदं त्रिजगत् कृतं ते स्वाम्यन्तु तत्र कुधियोऽपर ईश कुर्युः'' अतः वास्तव में देखा जाय तो दुःख का कारण भगवान् की वस्तु को अपना मान लेने से ही होता है। इतना ही नहीं यह शरीर भी हमारा नहीं है इसको भी हमें भगवान् ने अपनी (भगवान् की) सेवा के लिये दिया है। अतः इस शरीर का उपयोग भी भगवान् की सेवामें होना चाहिये। बुद्धिमानी तो इसी में है कि जब तक भगवान् अपनी वस्तुओं को हमसे छीने नहीं उसके पहले ही उनको

समर्पित कर दी जाय। अर्थात् यह देह और इस देह तथा जीव से सम्बन्ध रखने वाले सब पदार्थ भगवान् को समर्पित कर दें।

यह समर्पण कोई दान नहीं है। दान तो उसका होता है जो वस्तु हमारी हो और उसका अधिकार हम दूसरे को देते हों तथा दान देने के अनन्तर उसके उपयोग का हमें कोई अधिकार न हो। किन्तु यह सब कुछ तो भगवान् का ही है, इतने समय तक हम अज्ञानता से इन पदार्थों के ऊपर अपना अधिकार माने हुए थे। यह हमारी भूल थी। हे भगवन्! ये सब वस्तुएँ तो आपकी है और आप ही को समर्पित कर रहा हूँ तथा स्वयं मैं भी आप ही का दास हूँ। संक्षेप में ब्रह्म सम्बन्ध का आशय यही है। जब वह अपने देह, इन्द्रिय, प्राण, अन्तःकरण और उनके धर्मों का तथा देह से सम्बन्ध रखने वाले स्त्री, पुत्र, धन, घर आदि समर्पित कर देता है तब उसका जीवन निर्वाह तो भगवान् के द्वारा प्रसाद रूप में दिये गये अन्नादि से ही होगा। अतः जीव को भगवान् के प्रसाद के अतिरिक्त किसी वस्तु को ग्रहण नहीं करना चाहिये।

जब जीव का कुछ है ही नहीं सब कुछ भगवान् का है तब जीव को ऐसा मोह क्यों हो जाता है ? इसका कारण अवश्य कुछ होना चाहिये। कारण का जब विचार करते हैं तो जीव में मुख्य रूप से पांच प्रकार के दोष होते हैं, जिनके कारण उनकी बुद्धि कलुषित हो जाती है। वे पांच दोष इस प्रकार है - (१) सहज (२) देशजन्य (३) कालजन्य (४) संयोगजन्य (५) स्पर्शजन्य। इन दोषों का वर्णन वेदादि शास्त्रों में किया गया है एवं लोक में भी इनको दोषों में गिना गया है। प्रायः सभी दोषों का समावेश इन पांच दोषों में ही हो जाता है, क्योंकि इन दोषों के बत्तीस भेद हैं। इस देह में ग्यारह इन्द्रियां हैं, वे जब कुमार्ग में प्रवृत्त हो जाती हैं, तब उनके द्वारा ग्यारह प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इसी प्रकार जब देह भी हीन जाति में उत्पन्न हो जाय तो वह भी सहज दोष है, इस प्रकार बारह दोष सहज होते हैं। देशजन्य दोष सात प्रकार के हैं। ऊसर भूमि, गर्दभ क्षेत्र,

दुर्जन वास, हीनजल देश, जलान्तर्गत देश, स्वचक्रभय, परचक्रभय। काल दोष के तीन भेद हैं। प्रातः, मध्याह्न और सायं इन काल से यदि भगवत्सेवा होती है तब तो ये गुणरूप हैं उसके अभाव में तो दोषरूप ही है। संयोगज दोष सात प्रकार के हैं। साथ में भोजन, साथ शयन, एक ही आसन पर बैठना, एकसाथ गाना, सहमैथुन, परस्पर भाषण एवं एकसाथ रहना। स्पर्शज दोष तीन प्रकार के हैं। मानसिक स्पर्श, वाणी से स्पर्श और शरीर से स्पर्श।

शास्त्रों में इन दोषों को नष्ट करने के तीन साधन बताये हैं। उन साधनों का वर्णन स्वयं भगवान् ने ही अपने श्रीमुख से श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध में किया है। 'योगास्त्रयो मया प्रोक्ता नृणां श्रेयो विधित्सया। ज्ञानं कर्म च भक्तिश्च - ''मैंने मनुष्यों के कल्याण की इच्छा से ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग ये तीन योग कहे हैं। इनके अतिरिक्त जीवों के कल्याण का कोई साधन नहीं है। इनमें कर्मयोग के द्वारा दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति जिसे श्रेय कहते हैं वह नहीं होती। यह प्राचीनबर्हि राजा से नारदजी ने कहा है ''श्रेयस्त्वं कतमद् राजन् कर्मणात्मन ईहसे। दुःखहानिः सुखावाप्तिः श्रेयस्तन्नेह चेष्यते।।'' अरे राजन्! कर्मों के द्वारा तुम अपना कौनसा श्रेय (कल्याण) करना चाहते हो। दुःख का अत्यन्त नाश और परमानन्द की प्राप्ति जिसे श्रेय कहते हैं, वह तो कर्मों से प्राप्त नहीं होती। उक्त दोषों की निवृत्ति के लिये हम प्रायश्चित्त रूप कर्म ही तो करेंगे परन्तु प्रायश्चित्त से उनकी निवृत्ति नहीं होती। प्रायः देखा गया है कि पापों के प्रायश्चित्त के अनन्तर भी पुनः पापों के करने में प्रवृत्ति होती है। जैसा कि भागवत के छठे स्कन्ध में बताया है - 'कर्मणां कर्मनिर्हारो नह्यात्यन्तिक इष्यते। अविद्वदधिकारि-स्वात्प्रायश्चित्तं विमर्शनम्।।' कर्मों से कर्म का नाश आत्यन्तिक नहीं होता है क्योंकि कर्म करने वाला अधिकारी अज्ञानी होता है। अज्ञान के रहते पाप वासनाएँ पूर्ण रूप से नहीं मिट सकती। इसलिये सच्चा प्रायश्चित्त तो आत्म साक्षात्कार ही है।

अस्तु ज्ञानयोग के द्वारा उनकी निवृत्ति हो जायेगी। जैसा कि गीता में कहा है "यथैधांसि समृद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन। ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा।।" ज्ञान रूप अग्नि सब कर्मों को भस्म कर देती है। इससे कर्म की अपेक्षा ज्ञान को श्रेष्ठ बताया और आत्मसाक्षात्कार के द्वारा पापों की निवृत्ति बताई। परन्तु भगवान् ने श्रीमद्भागवत में ज्ञान के साथ अनेक साधनों के करने की आज्ञा दी है उनका वर्णन इन तीन श्लोकों में किया है - "नाश्नतः पथ्यमेवान्नं व्याधयोभिभवन्त्युत। एवं नियमकृद्राजन् शनैः क्षेमाय कल्पते।।१।। तपसा ब्रह्मचर्येण शमेन च दमेन च। त्यागेन सत्यशौचाभ्यां यमेन नियमेन च।।२।। देहवाग् बुद्धिजं धीरा धर्मज्ञाः श्रद्धयान्विता। क्षिप्न्त्यधं महदपि वेणुगुल्ममिवानलः।।३।।" इनमें पहले श्लोक में पथ्य भोजन के दृष्टान्त से धीरे-धीरे अनेक साधनों के द्वारा जिसे क्षेम शब्द में कहा गया है उस ज्ञान की उत्पत्ति होती है। दूसरे श्लोक में उस ज्ञान के सहकारी तप आदि साधन बताये। तीसरे में वाणी और बुद्धि से उत्पन्न पापों को इस प्रकार नष्ट कर देते हैं जिस प्रकार अग्नि बांसों की झाड़ी को नष्ट कर देता है। किन्तु इस समय ज्ञान के साथ जिन नो सहकारी साधनों को बताया है उनका होना बहुत ही कठिन है। इसलिये ज्ञान के द्वारा उक्त दोषों को दूर करना सहज नहीं है।

अब भक्ति के द्वारा दोषों की निवृत्ति शेष रही। उसके लिये इस प्रकार कहा है - "केचित् केवलया भक्त्या वासुदेवपरायणाः। अधं धुन्वन्ति कात्स्न्येन नीहारमिव भास्करः।।१।। न तथाह्यधंवान् राजन् पूयेत तप आदिभिः। यथा कृष्णार्पितप्राणस्तत्पुरुषनिषेवया।।२।। सध्रीचीनोह्ययं लोके पन्थाः क्षेमोऽकुतोभयः। सुशीलाः साधवो यत्र नारायणपरायणाः।।३।। सकृन्मनः प्रायश्चित्तानि चीर्णानि नारायणपराङ्मुखम्। न निष्पुनन्ति राजेन्द्र सुराकुम्भमिवापगाः ।।४।। कृष्णपदारविन्दयोर्निवेशितं तद्गुणरागियैरिह। न ते यमं पाशभृतश्च तद्भटान् स्वप्नेऽपि पश्यन्ति हि चीर्णनिष्कृताः।।५।।" इन पाँच श्लोकों में भक्ति को भी पाप को नष्ट

करने वाली बताई है। वह भक्ति तो ब्रह्मसम्बन्ध करने से ही हो सकती है, उसके बिना नहीं हो सकती। यहां पहले श्लोक में 'केचित्' यह पद दिया है। अतः ऐसी भक्ति के अधिकारी का मिलना बड़ा दुर्लभ है। दूसरा पद है 'केवलया'। इससे भक्ति में ज्ञान की तरह सहकारी की आवश्यकता नहीं है, और तीसरे, 'कात्स्र्न्येन पदसे नीहार और भास्कर के दृष्टान्त से पापों का नाश इस प्रकार से बताया कि उसमें कुछ भी शेष नहीं बचता। दूसरे श्लोक में 'कृष्णार्पित प्राणः' यह अधिकारी का विशेषण है। ऐसा अधिकारी तो ब्रह्मसम्बन्ध करने वाला ही हो सकता है। यह उचित भी है। क्योंकि अपना स्वामी जब निष्पाप होगा और उसका जब हम अनुसंधान करेंगे उससे सम्बन्ध करेंगे तो हमारे दोषों की निवृत्ति हो ही जायेगी। परन्तु इतना विशेष समझना कि 'तत्पुरुषनिषेदया' भगवद्भक्तों का सर्वदा संग होना चाहिये अन्यथा संगदोष से पुनः पापों का संक्रमण हो जायगा। तीसरे श्लोक में दाम्भिक (ढोंगी) आदि के संसर्ग का त्याग करना सूचित किया है। चौथे श्लोक में बर्हिमुख के द्वारा किया हुआ प्रायश्चित्त इस प्रकार निष्फल होता है जिस प्रकार सुरा की बोतल को गंगा पवित्र नहीं कर सकती 'सुराभाण्डमिवापगाः' पांचवे श्लोक में यह कहा है कि जिसका एक बार भी भगवान् के चरणों में मन लग गया और उस मन का अनुराग भगवान् के गुणों में हो गया उनको कभी यमराज के दूत दिखाई नहीं देंगे इससे उसमें पाप का लेशमात्र भी नहीं रहता, ऐसा सूचित किया। इससे यह निश्चित हुआ कि ब्रह्मसम्बन्ध के बाद भी भगवद्भक्तों का संग करना, अन्य साधनों में श्रद्धा न रखना और भगवान् के गुणों में ही चित्त का अनुराग होना ये सब जब होंगे तभी समूल सब पापों का नाश होगा।

लेखक :

त्रिपाठी यदुनन्दन नारायण जी शास्त्री

विद्याविभागाध्यक्ष

विद्याविभाग मंदिर मण्डल, नाथद्वारा-३१३३०१

वर्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरमासानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा

फाल्गुन शु. ७
गोस्वामि तिलकायित श्री १०८
श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) महाराज
श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) के लालजी १
मार्ग. कृ. ३० चि. गो. श्री भूपेशकुमारजी
(श्री विशाल बावा)

आषा. कृ. १३ गो. कल्याणरायजी
गो. कल्याणरायजी के लालजी २

पौ.कृ. ६ चि. श्रीहरिरायजी

अश्विन शु. ६ चि. श्रीवागधीशजी

चि. हरिरायजी के लालजी २
माघ शु. १३ चि. श्री वदान्य राय जी
(श्री गिरधर जी)

फा. शु. ३ चि. द्विजराज जी

पौष शु. ५ गो. श्री गोकुलोत्सवजी
श्रीगोकुलोत्सवजी के लालजी १

फा.शु. ४ चि. श्री अभिनवाचार्यजी
(श्रीव्रजोत्सवजी)

चि. अभिनवाचार्य जी के लालजी १

वै.शु. १२ चि. व्रजेश्वरजी (श्रीउमंगजी)

वै.कृ. ४ गो. दिव्येशजी

गो. श्री दिव्येश जी के लाल जी १

चै. शु. १४ श्री प्रिय व्रजराय जी
श्री देवकीनन्दन जी

कांकरोली

पौ.शु. १० गो. श्रीवृजेशकुमारजी

चै.कृ. ४ गो. पीताम्बरजी

वै.कृ. ६ गो. त्रिलोकीभूषणजी

श्रीव्रजेशकुमारजी के लालजी २
ज्ये.शु. ५ चि. पुरूषोत्तमजी

फा.कृ. ४ चि. द्वारकेशजी

श्रीपीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये. शु १४ चि. व्रजालंकारजी

गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
वै.कृ. १३ गो. चि. व्रजाभरणजी

श्रीपुरूषोत्तमजी के लालजी २
का. कृ. ६ गो. श्रीव्रजभूषणजी

का. शु. १० गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी

चि.व्रजाभरण जी के लालजी १
भा. शु. २ चि. रणछोड़ राय जी

आ. सु. ६ गो. रविकुमारजी
गो. रविकुमारजी के लालजी २

श्रा. ३० चि. अवतंस बावा
(मधुरम जी)

माघ व. ४ चि. प्रियम बावा

कोटा-बम्बई जतीपुरा

ज्ये. कृ ६ गो. लालमणीजी
लालमणीजी के लालजी २

श्रा.शु. ६ चि. गो. श्रीप्रभुजी
(मिलनकुमारजी)

चै. शु. ६ चि. द्वारकेशलालजी

श्री मिलनकुमारजी के लालजी १
श्रा.कृ.२ चि. रणछोड़ लालजी
(कृष्णास्थ बावा)

कोटा-कड़ी

चै.शु. १० गो. गोपाललालजी

गोविन्दरायजी के लालजी

भा.कृ. ६ चि. व्रजेशकुमारजी

माघ.व. १० गो. चि. घनश्यामलालजी

आसो. सु. १० गो. दामोदरलालजी

चै. व. १२ गो. चि. वल्लभलालजी
गो. वल्लभलालजी के लालजी १

आषा. सु. ८ चि. पुरूषोत्तमजी

घनश्यामलालजी के लालजी २

फा.शु. ७ गो.चि. कृष्णकुमारजी
गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १

पौ.व. ११ गो.चि. व्रजपाललालजी

फा.शु. ११ चि. कुंजेशकुमारजी
गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २

मार्ग.व. २ गो.चि. गोविन्दरायजी

आश्वि.व. ३ गो.चि. गोकुलमणीजी

गो. गोपाललाजी के लालजी २
आसो. व. ३ चि. विनयकुमारजी

आषा. व. ४ चि. शरदकुमारजी

श्रा.सु. ७ गो. त्रिलोकीभूषणजी
त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १

ज्ये.कृ. १ राजीवलोचनजी

व्रजेशकुमारजी के लालजी ३

चै.शु. ६ चि यदुनाथजी

चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ. ५ चि. प्रद्युम्नजी

कार्ति. सु. १० चि. द्वारकेशजी

कार्ति सु. ७ चि. जयदेवजी
चि. जयदेवजी के लालजी १

मार्ग कृ. १३ चि. व्रजराजजी

चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा. व. १२ चि. हरिरायजी

ज्ये.व. १० चि दर्शन कुमारजी

चि. दर्शनकुमार जी के लालजी १
ज्ये. व. ४ चि. व्रजाधीश जी

कामवन

फा. सु. २ गो. श्री वल्लभलालजी
गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २

भा. कृ. २ चि. श्री देवकीनंदनजी

श्रा. कृ. १० चि. श्री विट्ठलनाथजी

कामवन/सूरत

आ. कृ. १४ गो. श्री द्वारकेशलालजी
गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २

फा. शु. ३ चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा. कृ. १३ चि. श्री कन्हैयालालजी

च. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
भा. कृ. ४ चि. श्री गोविन्दजी

का. शु. ७ चि. श्री गोकुलचन्द्र जी

चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का. शु. १० चि. श्री जयदेवजी

कामनवन/भावनगर

भा. शु. १ गो. श्री नवनीतलालजी

गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का. शु. १ चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का. कृ. ११ गो. मुरलीधर जी
गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १

मार्ग. शु. ४ चि. श्री जयदेवलालजी

चै. कृ. १३ गो. श्री रघुनाथलालजी
गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २

मार्ग. शु. ६ चि. श्री गिरधरजी

श्रा. कृ. ५ चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

माघ. सु. १३ गो. घनश्यामजी

चै. सु. १५ गो. रघुनाथलालजी (गोकुल-मुम्बई)
गो. घनश्यामजी के लालजी ३

आष.सु. ११ चि. ब्रजेशकुमारजी

श्रा. व. ३ चि. गोपाललालजी

आसो. व १२ चि. कल्याणरायजी

गो. रघुनाथजी के लालजी १

माघ. सु. ४ चि. योगेशकुमारजी
चि. योगेशकुमारजी के लालजी २

आ. व. १३ चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रा. कृ. ३० चि. व्रजपालजी (मुदितजी)

भा.सु. १४ गो. शिशिरकुमारजी

गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो. व. ४ चि. लालजी

गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी २
श्रा. व. ३ गो. चि. अनिरूद्धजी

भा. व. १ गो. चि. उपेन्द्रजी

चि. अनिरूद्धजी के लाल जी १
फा. कृ. ६ चि. रमणजी (रसेश जी)

गोकुल

का. व. १० गो. देवकीनन्दनजी
गो. देवकीनन्दन के लालजी २

मा. व. ३० चि. वल्लभलालजी

का. सु. २ चि. विट्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो. व. १४ गो. जयदेवलालजी
गो. जयदेवलालजी के लालजी ३

ज्ये. सु. १ चि. मथुरेशजी
चि. मथुरेशजी के लालजी १
आसो. व. १४ चि. रघुनाथ जी

आसो. व. ६ चि. ब्रजेशकुमारजी
चि. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व. ६ चि. रसिकप्रितमजी

चि. कन्हैयालालजी के लालजी १
श्रा. व. ८ चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

माघ. व ५ गो. कल्याणरायजी

मार्ग. सु. ११ गो. वल्लभलालजी

आषा. व. ४ गो. गोपेश्वरजी

पौ. व. ३ गो. मुकुन्दरायजी

गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आसो. व. १ चि. अनुरागजी

गो. गोपेश्वरजी के लाल जी १

फाल्गु. व ६ चि. वत्सलराजजी

चि. अनुरागरायजी के लालजी १

आसो. व. ७ चि. पुरूषोत्तमरायजी

बड़ोदरा, सूरत

चै. सु. ११ गो. मथुरेशजी

भा.व. ४ गो. चन्द्रगोपालजी

पौ. व. ५ गो. प्रभुजी

गो. मथुरेशजी के लालजी २
भा.सु. ६ चि. योगेशकुमारजी

भा.व. २ चि. द्रुमिलकुमारजी
गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १

चि. व्रजराजकुमारजी

चापासेनी-जामनगर-नडियाद

मा. व. ३ गो. विट्ठलनाथजी

ज्ये. सु. ५ गो. हरिरायजी

फा. व. १४ गो. व्रजरत्नजी

पौष सु. ६ गो. नवनीतरायजी

आष. सु. गो. बालकृष्णजी

गो. चि. विट्ठलेशरायजी के लालजी ३

आषा. सु. १५ चि. मुकुट बावा

फा. व. १२ चि. शरदकुमारजी

फा. सु. १५ चि. उत्सवजी

चि. हरिरायजी के लालजी १
का. व. १२ चि. व्रजवल्लभजी

गो. व्रजरत्नजी के लालजी १
अश्वि. सु. ७ चि. गोकुलोत्सवजी

गो. नवनीतलालजी के लालजी १
ज्ये. सु. १० चि. अंजनरायजी

बालकृष्णजी के लालजी १
पौ. सु. १ चि. प्रियांकजी

मथुरा

पौ. व. ६ गो. प्राणवल्लभजी

गो.प्राणवल्लभलालजी के लालजी २
का. शुक्ल ११ चि. व्रजवल्लभजी
चै. वदी ११ चि. जयवल्लभ जी
चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै. कृ. ११ चि. कृतार्थ बावा
भा. सुदी ५ गो. रसिकवल्लभजी
गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी २
मृग शुक्ल ५ चि. समर्पण बावा
आ. सु. ६ चि. प्रागट्य कुमार जी
का. सु. ६ गो. अक्षयकुमारजी
आषा. सु. १४ गो. शरदकुमारजी
गो. शरदकुमारजी के लालजी ३
माघ. व ६ चि. गोपाललालजी
का.सु. ५ चि. व्रजभूषणलालजी
ज्ये. सु. ११ गो. प्रबोधकुमारजी
गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी १
भा. सु. ४ चि. रत्नेशकुमारजी
चि. प्रबोधकुमारजी के लालजी १
भा. सु. ८ चि. अभिषेक बावा
मार्ग. व. २ गो. संदीपकुमारजी
पौ. सु. ६ गो. संजयकुमार जी
गो. अक्षयकुमारजी के लालजी ३
आसो. सु. १ चि. प्रणयकुमारजी
प्रणयकुमारजी के लालजी २
फा.शु. १२ गो.चि. श्रीअलंकारजी
फा.शु. ७ गो.चि. वृजरायजी
पौ. व. ६ चि. परितोषकुमारजी
मार्ग. व. ८ चि. पंकजकुमारजी

वाराणसी

मार्ग. सु. २ श्याम मनोहरजी
गो. श्याममनोहरजी के लालजी १
मार्ग. कृ. ६ गो. चि. प्रियेन्दु बावा

अहमदाबाद

का.सु. १२ चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २
आसो. व. १० चि. मधुसूदनलालजी (तिलक बावा)
आश्वि. शु. १ गो.चि. रणछोड़लालजी

(आभरण बावा)

गो.चि. मधुसूदनलालजी
(तिलक बावा) के लालजी २

ज्ये.सु. २ गो. चि. व्रजरायजी
(निवेदन बावा)

आ.व.१० गो.चि. व्रजेश्वरजी
(आभुषणजी बावा)

मुम्बई

मार्ग. व. ६ गो. नीरजकुमारजी

गो. नीरजकुमारजी के लालजी २
वै.व.१४ चि. गोविन्दरायजी
आ.सु.५ चि. मनमथरायजी

गो. गोपीनाथजी के लालजी २
का. व. १३ चि. रमेशचन्द्रजी
माघ. सु. ६ चि. अनिरूद्धलालजी
(श्रीराजकुमारजी)

चि. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ. व. ६ गो. रघुनाथजी

गो. रघुनाथजी के लालजी २
भा. सु. ५ चि. गोपीनाथजी दिक्षीत जी

(गो. राहुल जी)

मार्ग. सु. २ चि. नागरमोहनजी
(चि. निवेद जी)

चि. अनिरूद्धजी के लालजी २
माघ. व. ६ चि. यदुनाथजी

फा. सु. १५ चि. गोकुलनाथजी

गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
आसो. सु. ७ गो. हरिरायजी

पौ. व. ४ गो. मधूसुदन जी

फा. सु. १३ गो. मुरलीमनोहरजी

आषा. सु. २ गो. कृष्णकान्तजी

चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा. शु. ११ चि. गिरिधरलालजी

चै.सु. १४ गो. पुरूषोत्तमलालजी
गो. पुरूषोत्तमलालजी के लालजी २

मार्ग. सु. ४ चि. गोकुलनाथजी

आषा. सु. ११ चि. ललितत्रिभंगीजी

चि. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा. सु. ८ चि. व्रजवल्लभलालजी

गो. हरिरायजी के लालजी २
मार्ग व ४ चि. हृषीकेशजी

चि. हृषीकेशजी के लालजी २
आसो. सु. १ चि. राजीवलोचनजी

वै.सु. ७ रविरायजी

गो. द्वारकाधीशजी के लालजी २
वै. व. ४ चि. योगेशकुमारजी

चि. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा. व. ३० चि. बालकृष्णलालजी
(मिथिलेशकुमारजी)

आसो. व. ४ चि. कमलेशकुमारजी
चि. कमलेशकुमारजी के लालजी १

फा. कृ. ६ चि. मुकुन्दरायजी

आसो. सु. १ गो. मनमोहनजी
मनमोहनजी के लालजी १

आ. व. १४ गो. चि. प्रियव्रतरायजी

आषा. ३० गो. हिरण्यगर्भजी
गो. हिरण्यगर्भजी के लाल जी १

आ. कृ. ११ चि. हैयंगवीनजी

गो. मधुदसूदनजी के लालजी २

चै.सु. १० चि. कृष्णचन्द्रजी

पौ. व. ५ चि. वल्लभदीक्षितजी

गो. मुरलीमनोहरजी के लालजी १

आसो. सु. ११ चि. गोपिकालंकारजी

चि. गोपिकालंकारजी के लालजी २

मा.व.१० चि. गो. श्री भक्तवत्सल बावा

फा.व.२ चि. गो. श्री तिलकराय बावा

कान्दीवली-मुम्बई

ज्ये. सु. २ गो. द्वारकेशलालजी

कार्ति. सु. ७ गो. पुरूषोत्तमजी

गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी १

आसो.व. २ गो. श्री विट्ठलराय जी
(अनुग्रह कुमार जी)

मुम्बई विलेपार्ले

आसो. सु. ३ गो. रसिकवल्लभजी

चैत्र सुदि ६ गो. महेन्द्रकुमारजी

गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १

आसो. सु. १३ चि. शिशिरकुमारजी
चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १

पौ. कृ. ५ चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ. सु. ८ गो. माधवरायजी

मार्ग. सु. ६ गो. चन्द्रगोपालजी
गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १

श्रा. कृ. ६ चि. अनिरूद्धलालजी

आसो. व. १४ गो. शैलेशकुमारजी
श्रीशैलेशकुमारजी के लालजी १

श्रा. सु. ३ चि. लाडिलेशजी

गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा. व. ४ चि. मुरलीधरजी

बोरीवली-जामखंभालिया

पौ. सु. १३ गो. वल्लभलालजी

श्रा. व. १३ गो. राकेशकुमारजी

गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का. व. १३ गो. त्रिभंगीलालजी

चै. व. ११ गो. व्रजप्रियजी

चै. व. १४ गो. यशोदानन्दन जी

गो. यशोदानन्दन जी के लालजी १
माघ व. १० चि. व्रजनाथलालजी
(श्री नुपुर कुमार जी)

गो. वल्लभलालजी के लालजी ३
वै. सु. १३ चि. राजीवलोचनजी

मार्ग. सु. २ चि. गोविन्दरायजी

चि. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा. सु. २ चि. मधुसूदन जी
(चि. रूचिरबाबा)

ज्ये. सु. १५ चि. गोपिकालंकारजी
चि. गोपिकालंकारजी के लालजी १

फा. सु. २ चि. गो. द्वारकेशलालजी

गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३

आषा. व. ५ चि. देवकीनन्दनजी
(भागवतकुमारजी)

चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १

चै.व. ११ चि. गो. श्री दीक्षितजी
(चि. वेदांग बावा)

ज्ये. सु. ४ चि. कुंजरायजी
(योगीन्द्रकुमारजी)

श्रा. कृ. ३ चि. गो. गिरिधरजी

गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का. सु. ३ चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा. व. ३ गो. दानीरायजी
गो. दानीरायजी के लालजी ४

श्रा. सु. १२ चि. गोकुलेशजी

का. सु. ५ चि. पुरूषोत्तमजी

आषा. सु. ११ चि. व्रजेन्द्रकुमारजी

चि. व्रजेन्द्रकुमारजी लालजी २

भा.व. १ चि. ब्रजनाथजी
(चि. शशांक बावा)

आश्वि. व. १३ चि. मधुरेशजी
(चि. मृदुल बावा)

का. शु. १५ चि. विशालकुमारजी

पूना-मद्रास

चै. सु. ४ गो. अजयकुमारजी
गो. अजयकुमारजी के लालजी १

भा. कृ. ६ चि. वागधीशकुमारजी

फा. व. ११ गो. भरतकुमारजी
गो. भरतकुमारजी के लालजी १

वै. व. २ चि. यशोवर्द्धन जी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै. सु. १४ गो. रणछोड़लालजी (राजकोट)
गो. रणछोड़लालजी के लालजी १

फा. कृ. १३ चि. गोकुलनाथजी

माघ. व. ६ गो. अनिरूद्धलालजी
गो. अनिरूद्धजी के लालजी १

वै. सु. १४ चि. रसिकरायजी (शरदजी)
चि. रसिकरायजी के लालजी १

श्रा. कृ. ७ चि. अचिन्त्य जी

आषा. सु. ८ गो. चिमनलालजी (गोकुल)
गो. चिमनलालजी के लालजी २

आ. कृ. ६ चि. चन्द्रगोपालजी (पंकज बावा)

का. सु. ४ चि. भूषणजी

चि. चन्द्रगोपालजी के लालजी २
का. सु. १२ चि. अन्वयजी

श्रा. सु. ५ चि. प्रत्यय जी

चि. भूषणजी के लालजी २
फा. कृ. ३ चि. अव्ययजी

का. सु. ८ चि. गोपालजी

वै. सु. ६ गो. किशोर चन्द्रजी (जूनागढ)
गो. किशोरचन्द्रजी के लालजी १

का. व. ४ चि. व्रजेन्द्रजी (पीयूष बावा)
चि. व्रजेन्द्रजी के लालजी २

का. कृ. २ चि. ब्रजवल्लभजी

पौ. कृ. ७ चि. पुण्यश्लोकजी

पौ. सु. १२ गो. विट्ठलनाथजी (मुम्बई)

आश्विन कृ. ७ गो. श्री सांरगजी (बडोदरा)
गो. श्री सारंगजी के लालजी १

फा.सु. १४ चि. घनश्यामलालजी (उत्सव बावा)

पोरबन्दर

वै. सु. ७ गो. हरिरायजी
हरिरायजी के लालजी १

मा. शु. ११ चि. जयगोपालजी

मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग. व. १० गो. रसिकरायजी

आ. सु. १२ गो. मथुरेशकुमारजी

आसो. व १० गो. कन्हैयालालजी

पौ.कृ.८ श्री श्याम मनोहर जी

गो. रसिकरायजी के लालजी २
वै. व. १० चि. चन्द्रगोपालजी

वै. व. ७ चि. शरदकुमारजी

गो. मथुरेशकुमारजी के लालजी २
माघ. व. १२ चि. वसन्तकुमारजी

का. सु. ६ चि. विशालकुमारजी

चि. वसन्तकुमारजी के लालजी १

भा. व. १२ चि. श्रीकृष्णरायजी

गो. कन्हैयालालजी के लालजी २
फा. कृ. ५ चि. अभिषेककुमारजी

वै. शु. ३ चि. अक्षयकुमारजी

गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
आषा. सु. ७ चि. मिलनकुमारजी

चि. मिलनकुमारजी के लालजी १
मार्ग शु. ८ चि. गोकुलनाथजी

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की सूचना

वै. सु. ३ श्रीदेवकीनन्दनजी कामवन
वै. व. ११ श्रीदेवकीनन्दनजी इन्दौर
वै. व. १२ श्रीदीक्षितजी बम्बई
वै. व. १४ श्रीविट्ठलेशरायजी पोर.
ज्ये. सु. ६ श्रीगिरधरजी कोटा
जये. सु. १२ श्रीद्वारकेशलालजी कोटा
ज्ये. सु. १५ श्रीजीवनलालजी काशी
ज्ये. व. ८ श्रीघनश्यामलालजी मांडवी
ज्ये. व. १४ श्रीवागधीशजी अमरेली
आ. सु. ३ श्रीवल्लभलालजी कामवन
भा. सु. ७ श्रीव्रजरत्नलालजी सूरत
फा. शु. १५ श्रीमाधवरायजी पोर.
का. व. ७ श्रीगोविन्दलालजी नाथद्वारा
आ. व. ८ श्रीघनश्यामलालजी कामवन
आ. व. १२ श्रीविट्ठलेशरायजी बम्बई
वै. व. १ श्रीद्वारकेशजी पोरबन्दर
आ. व. १ श्रीगोकुलेशरायजी जूनागढ़
आ. व. ८ श्रीयदुनाथजी सूरत
आ. व. १० श्रीव्रजरत्नलालजी नडियाद
आ. व. १३ श्रीबालकृष्णजी कांकरोली
आ. व. १३ श्रीकृष्णरायजी इन्दौर

आ. व. १३ श्रीगोकुलेशजी बम्बई
आ. सु. ३ श्रीदामोदरलालजी चापां
भा. वं. १ श्रीगोवर्द्धनलालजी नाथद्वारा
माघ व. २ श्रीव्रजभूषणलालजी कांक
फा. व. ५ श्रीचिम्मनलाल जी बम्बई
मा. व. ३० श्रीगोविन्दरायजी पोर.
मा. कृ. १ श्रीदाऊजी (राजीवजी) नाथद्वारा
श्रा. व. १४ श्रीगोपाललालजी कांकरोली
भा. व. ८ श्रीमुरलीधरजी बेटद्वार
श्रा. व. ८ श्रीकन्हैयालालजी गोकुल
भा. व. १० श्रीव्रजनाथजी विलेपार्ले
का. सु. १४ श्रीजीवनलालजी कोटा
भा. व. ७ श्रीवल्लभलालजी बड़ौदा
भा. व. ८ श्रीमुरलीधरजी कोटा
भ. व. ११ श्रीनृसिंहलाल जी शेरगढ़
आ. सु. १३ श्रीरघुनाथजी जूनागढ़
आ. व. ३ श्रीघनश्यामलालजी बम्बई
आ. व. ५ श्रीव्रजनाथजी जामनगर
आ. व. ६ श्रीमगनलालजी सूरत
आ. व. १३ श्रीव्रजपाललालजी मथुरा
का. व. २ श्रीपुरूषोत्तमलालजी जूना

का. सु. ६ श्रीपुरूषोत्तमलालजी अमरे

का. सु. ७ श्रीलालमणिजी कोटा

का. सु. ८ श्रीगोपाललालजी मथुरा

फा. सु. ८ श्रीरमणजी कामवन

आ. सु. ३ श्रीगोपालालजी कांकरोली

का. व. १४ श्रीजयदेवजी वीरमगाम

मार्ग सु. १३ श्रीगिरधरलालजी नाथ

ज्ये. सु. ५ श्रीजीवनजी बम्बई

ज्ये. सु. ११ श्रीकल्याणरायजी मथुरा

ज्ये. सु. १३ श्रीजीवनलालजी पोर

ज्ये. सु. १४ श्रीद्वारकेशलालजी बम्बई

श्रा. व. ७ श्रीरणछोड़लालजी बम्बई

पौ. सु. ५ श्रीगोपेश्वरलालजी नाथद्वारा

पौ. सु. ६ श्रीदामोदरलालजी नाथद्वारा

पौ. सु. ७ श्रीरणछोड़लालजी कोटा

पौ. व. ११ श्रीरणछोड़लालार्जी राज

पौ. व. ६ श्रीवल्लभलालजी बम्बई

का. सु. ४ श्रीमधुसूदनलालजी अमरे

का. सु. १० श्रीगोकुलाधीशजी बम्बई

का. सु. १५ श्रीगिरधरलालजी काशी

श्रा. व. १२ श्रीप्रद्युम्नलालजी वेटद्वार

फा. सु. ३ श्रीगिरधरजी सूरत

फा. सु. ११ श्रीगोविन्दरायजी सूरत

फा. व. १३ श्रीव्रजरायजी अहमदाबाद

श्रा. व. ६ श्रीकृष्णजीवनजी

माघ. व. २ श्री नटवरलालजी

का. सु. १ श्रीरमणलालजी मथुरा

श्रा. सु. १२ श्रीविट्ठलेशरायजी चापा

श्रा. सु. ३० श्रीकन्हैयालालजी बम्बई

भा. सु. १२ श्रीगोकुलनाथजी बम्बई

भा. सु. १२ श्रीअनिरूद्धलालजी नडियाद

भा. व. ३ श्रीगोवर्द्धनलालजी बम्बई

भा. व. ३ श्रीदामोदरलालजी मथुरा

भा. व. ७ श्रीघनश्यामलालजी सूरत

वै. कृ. ५ श्रीरणछोड़लालजी कोटा

ज्ये. व. १२ श्रीब्रजरमणलालजी मथुरा

भा. कृ. १२ श्रीगोविन्दरायजी कोटा

का. सु. १३ श्रीगोविन्दरायजी कामवन

पौ. व. १२ श्रीव्रजभूषणलालजी नड़ि

आसो व. १० श्री व्रजरायजी
(नटवरगोपालजी) अहमदाबाद

श्रा. सु. ११ श्रीगिरधारीलालजी मु.

चै. सु. १५ श्रीमुरलीधरलालजी बोरी.

वै. सु. ११ श्रीयदुनाथरायजी जती.

वै. व. ३० श्रीवागीशरणजी बम्बई

आषा. सु. २ श्रीगोपाललालजी कामवन

आषा. सु. २ श्रीमगनलालजी वेरावल

श्रा. सु. २ श्रीवल्लभलालजी बम्बई

श्रा. व. ३० श्रीकन्हैयालालजी बम्बई

भा. सु. ४ श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा

का. सु. १ श्रीगोवर्द्धनेशजी बम्बई

का. सु. ३ श्रीप्रदीपकुमारजी मथुरा

का. सु. ११ श्रीश्यामसुन्दरजी बम्बई

भा. सु. १० श्रीदामोदरलालजी बम्बई

भा. सु. ११ श्रीव्रजवल्लभजी जूना

भा. सु. १३ श्रीपुरूषोत्तमलालजी को.

पौ. सु. ४ श्रीगोकुलनाथजी वेरावल

फा. सु. १२ श्रीकाकागिरधरजी नाथ.

भा. सु. ६ श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा

पौ. सु. १० श्रीकल्याणरायजी बम्बई

चै. सु. १३ श्रीमुरलीधरजी काशी

ज्ये. सु. ४ श्रीत्रिविक्रमरायजी कोटा

आषा. सु. ३ श्रीमथुरेशजी मुम्बई

वै. सु. १५ श्रीमाधवरायजी मुम्बई

भा. व. १ श्रीमदनमोहनजी मुम्बई

आषा. व. ३ श्रीनटवरगोपालजी (मु.-वेरावल - पोरबन्दर)

ज्ये. व. ४ श्रीगिरधरलालजी कामवन

फा. सु. १४ श्रीमधुसुदनलालजी सूरत

आष.व. ११ श्रीबालकृष्णलालजी सूरत

पौ.व. ६ श्रीविट्ठलनाथजी मथुरा

फा. व. ३० श्रीकृष्णचन्द्रजी मुम्बई

का. सु. ७ श्रीजीवनेशजी मुम्बई

वै. व. १४ श्रीव्रजाधीशजी मुम्बई

आ. सु. ५ श्रीविट्ठलेशरायजी कां. मुम्बई

का. व. ८ श्रीराजेन्द्रकुमारजी मथुरा

आषा. व. ११ श्रीविट्ठलेशरायजी इन्दौर

आसौ. सु. ११ श्रीकृष्णकुमारजी कामवन

माघ सु. ४ श्रीकृष्णकुमारजी मथुरा

माघ वदी ४ श्रीनृत्यगोपालजी मुम्बई

मार्ग. सु. १४ श्रीद्वारकेशलालजी मांडवी

माघ. कृ. २ श्रीनटवरलालजी मांडवी

वै. सु. १० श्रीमुरलीमनोहरजी बडोदरा

आ. सु. ५ श्रीदामोदरलालजी राजकोट

ज्ये. सु. ८ श्रीमुकुन्दरायजी राजकोट

वै. सु. ६ श्रीयदुनाथजी मथुरा

का.व. १० उत्तमश्लोकजी मुम्बई

फा.सु. ४ गोकुलनाथजी गोकुल

आषाढ़ व. ८ रसिकरायजी चापासेनी -जामनगर-नडियाद

भा. सु. ८ गो. व्रजजीवनजी - कान्दीवली - मुम्बई

आ.शु. १४ गो. देवेन्द्रकुमारजी, नाथद्वारा

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.promptsoftech.nathdwaradesign

जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी प्रवर्तित पुष्टिमार्ग में श्री वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजी ने प्रभु सेवा को ही परमफल जनायो है। और श्री विट्ठलेश प्रभु श्री गुसांईजी परमदयाल ने भी सेवा एवं तत्सुख के विचार को ही केन्द्र में राख्यो है एवं याही प्रकार सूं मार्ग को संवर्धन करिवे के अर्थ अपने सातों बालकन को सात निधि स्वरूप पधराये और आपने श्रीजी एवं श्री लाडिलेलाल श्री नवनीतप्रियजी को अपने माथे पधराय राखे एवं सेवा कीनी। पीछे श्रीनाथजी एवं श्री लाडिलेलाल ने स्वेच्छा सूं पक्षपात करके अपने प्रिय श्री गिरिधरजी (प्रथम लालजी) को अपनी सेवा के लिये चुन्यो और ता पीछे तिलकायत परिवार को वरण कियो अपनी सेवा के लिये। और श्रीनाथजी बाबा एवं लाडिलेलाल की ऐसी अनहद् कृपा सूं रसाक्त व्हे के तिलकायत परिवार ने भी सदैव श्री प्रभु चरण श्री गुसांईजी की कृपा सूं परम प्रेम एवं पराक्रम सूं श्री प्रभु की सेवा कीनी एवं मार्गीय प्रणाली को संरक्षित कियो। याही क्रम में जब मेवाड़-श्रीजी द्वार पर होल्कर की सेना ने आक्रमण कियो तब परम पराक्रम सूं ति. श्री गिरिधरजी महाराज (वि.सं. १८५८, माघ कृष्णपक्ष १०) ने प्रभून कूं उदयपुर पधरायो एवं वहां सूं घसियार पधरायो एवं नयो नाथद्वारा बसायो। इतिहास की दृष्टि सूं ये उपक्रम २१४ वर्ष पूर्व भयो। पुष्टिमार्ग कृपा को मार्ग है। अकबर पात्साह ने जब श्री प्रभुचरण सूं पूछ्यो के **साहिब कैसे मिले** तो प्रभुचरण ने मार्ग को मर्म समझाते भये आज्ञा की **जैसे आप हमसे मिले** याको अर्थ है के जो सर्वसमर्थ है सो स्वयं की इच्छा बिना काहू सो मिले नहीं है जो स्वयं की इच्छा होय तो तुरन्त मिलें। सो ऐसे ही २१४ वर्ष बाद उदयपुर (मेवाड़) के जीवन पर कृपा करवे के मिष श्री नवनीतप्रिय प्रभु ति. श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेश जी) महाराजश्री के मनोरथ स्वरूप उदयपुर पधारे एवं सब जड़ चैतन्य सृष्टि के मनोरथन को परम आनन्द सूं पूर्ण कियो। क्योंकि पुष्टिमार्ग में यही विलक्षणता है के प्रभु भक्त के प्रेम के विवश होकर भक्त के पास आपही पधारे हैं, मर्यादामार्ग में ये सुख कहाँ ? सो पुष्टिमार्ग के लाडिले प्रभु श्री नवनीतप्रियजी भी तिलकायत परिवार की कानि सूं तिलकायत परिवार के प्रेमवश होकर भक्तन पर पुष्टि की रीति सूं कृपा करवे के लिये पधारे एवं अभूतपूर्व कृपा एवं आनन्द की वृष्टि कीनी सों या रस को पान करवे वारे समस्त जीवन के हृदय में अक्षुण्ण स्मरणिका के रूप में सदैव विद्यमान रहेगी।